

E-LECTURE
UNIT 4
HISTORY OF INDIA (650-1206 A.D.)
Dr. NANDANI PATHAK
SOS ARCHAEOLOGY DEPARTMENT
12.04.2020

वेंगी के पूर्वी चालुक्य (Eastern Chalukyas of Vengi)

बादामी के चालुक्य सम्राट द्वितीय ने अपने दक्षिण भारतीय अभियानों में सम्पूर्ण दक्कन को जीतकर एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की। उसने पूर्वी दक्कन को नियन्त्रित करने के लिए अपने छोटे भाई विष्णुवर्धन को वहाँ का राज्यपाल नियुक्त किया। बाद में विष्णुवर्धन ने अपनी शक्ति बढ़ाकर स्वयं को स्वतन्त्र घोषित कर दिया। इसी को वेंगी के पूर्वी चालुक्य राजवंश नाम से जाना जाता है। विष्णुवर्धन प्रथम (615-633 ई) उसका पहला शासक हुआ। पूर्वी चालुक्यों की पहली राजधानी पिष्टपुर थी, उसके पश्चात् वेंगी बनी और अन्त में राजमहेन्द्री बनी। विष्णुवर्धन के पश्चात् क्रमशः जयसिंह प्रथम (633-663 ई), इन्द्रवर्मन् (663 ई), विष्णुवर्धन द्वितीय (663-672 ई), सर्वलोकाश्रय (मंगि या विजयसिंह) (672-696 ई), जयसिंह द्वितीय (696-709 ई), कोकुल विक्रमादित्य (709 ई), विष्णुवर्धन द्वितीय (709-746 ई) और विजयादित्य प्रथम (746-764 ई) शासक हुए। विजयादित्य के समय में राष्ट्रकूटों ने बादामी के चालुक्यों को समाप्त कर दिया और उसके पश्चात् पूर्वी चालुक्यों को समाप्त करने के प्रयत्न आरम्भ किये जिसके कारण राष्ट्रकूटों और पूर्वी चालुक्या का संघर्ष शुरू हुआ।

विजयादित्य का उत्तराधिकारी उसका पुत्र विष्णुवर्धन चतुर्थ (764-799 ई) हुआ। उसके समय में 769 ई. में राष्ट्रकूटों ने विष्णुवर्धन को परास्त करके उसे अपना आधिपत्य स्वीकार करने के लिए बाध्य किया। 799 ई. में गोविन्द द्वितीय और उसके भाई ध्रुव में राष्ट्रकूट-सिंहासन के लिए संघर्ष हुआ। इसमें चालुक्यों ने गोविन्द की सहायता की। परन्तु अन्त में ध्रुव विजयी हुआ और उसने चालुक्यों को पराजित करके अपमानित किया। विष्णुवर्धन का उत्तराधिकारी विजयादित्य द्वितीय (799-847 ई) हुआ यद्यपि उसके भाई भीम ने राष्ट्रकूट-शासक गोविन्द तृतीय की सहायता लेकर कुछ वर्षों के लिए उससे सिंहासन छीन लिया, परन्तु अन्त में विजयादित्य की ही विजय हुई। विजयादित्य ने 12 वर्ष तक राष्ट्रकूट और गंग-शासकों से संघर्ष किया। आरम्भ में वह सफल भी हुआ परन्तु अन्त में गोविन्द तृतीय के उत्तराधिकारी अमोघवर्ष ने उसे राष्ट्रकूटों का आधिपत्य स्वीकार करने के लिए बाध्य किया।

विष्णुवर्धन पंचम (847-848 ई) विजयादित्य का उत्तराधिकारी हुआ परन्तु उसने केवल 18 या 20 माह शासन किया। उसके पश्चात् उसका पुत्र विजयादित्य तृतीय (848-892 ई.) शासक हुआ। विजयादित्य तृतीय इस वंश का सबसे अधिक शक्तिशाली शासक हुआ जिसने पल्लव, पाण्ड्य, पश्चिमी गंग, दक्षिणी कोसल, कलिंग, कलचुरि और राष्ट्रकूट-शासकों को परास्त किया।

विजयादित्य तृतीय के पश्चात् चालुक्य भीम प्रथम (892-921 ई) शासक बना। उसका सम्पूर्ण शासन-काल राष्ट्रकूट-शासक कृष्णा द्वितीय से संघर्ष करते हुए व्यतीत हुआ। वह कई बार परास्त भी हुआ परन्तु अन्त में वह राष्ट्रकूटों को अपने राज्य की सीमाओं से बाहर निकालने में सफल हुआ। परन्तु इस संघर्ष ने चालुक्यों की शक्ति को बहुत दुर्बल कर दिया। चालुक्य भीम के पश्चात् क्रमशः विजयादित्य चतुर्थ (921-922 ई), अम्मा प्रथम (922-929 ई) और विजयादित्य पंचम शासक हुए। विजयादित्य पंचम ने केवल 15 दिन शासन किया और ताल ने उसे सिंहासन से हटा दिया। उस समय से चालुक्यों में पारस्परिक प्रतिद्वन्द्विता की शुरुआत हुई। राजवंश के विभिन्न व्यक्तियों ने बाहरी शक्तियों की सहायता लेकर सिंहासन पर अधिकार करने का प्रयत्न किया जिसके कारण शासकों में जल्दी-जल्दी परिवर्तन हुए और क्रमशः विक्रमादित्य द्वितीय (9-11 माह), भीम द्वितीय (8 माह) और युद्धमल्ल द्वितीय (930-935 ई) शासक हुए। मल्ल के समय में आन्ध्र-प्रदेश में राष्ट्रकूट पूर्ण शक्तिशाली बन चुके थे। मल्ल को परास्त करके चालुक्य भीम तृतीय (935-946 ई), ने प्रायः 12 वर्ष शासन किया। उसके पश्चात् अम्मा द्वितीय (946-956 ई), बादप, ताल द्वितीय पुनः अम्मा द्वितीय, दानारनव और चोडा भीम शासक हुए। अन्त में, चोल-शासक राजपाल की सहायता लेकर

शक्तिवर्मन् प्रथम (दानारनव का पुत्र) ने वेंगी पर अधिकार (999 ई) में कर लिया। उसके समय से चालुक्यों की स्वतन्त्र सत्ता नष्ट हो गयी और वे चोल-शासकों के अधीन शासक मात्र रह गये। इस प्रकार, राष्ट्रकूट-शासकों से संघर्ष और अपनी आन्तरिक फूट के कारण 10वीं सदी के अन्त में पूर्वी चालुक्यों का स्वतन्त्र अस्तित्व नष्ट हो गया।

3. कल्याणी के उत्तरकालीन पश्चिमी चालुक्य (Later Western Chalukyas of Kalyani)

कल्याणी के चालुक्य राष्ट्रकूट-शासकों के अधीन सामंत शासक थे। अन्तिम राष्ट्रकूट-शासक कर्क के समय में उसके चालुक्य सामन्त तैल द्वितीय ने विद्रोह किया और कर्क को परास्त करके राष्ट्रकूटों के राज्य पर अधिकार कर लिया। गंग-शासक मारसिंह ने अपने भतीजे और राष्ट्रकूट-वंशज इन्द्र की तरफ से एक बार फिर राष्ट्रकूटों के राज्य को प्राप्त करने का प्रयत्न किया परन्तु उसकी पराजय हुई। इस प्रकार, तैल द्वितीय ने पिछले चालुक्यों के साम्राज्य का निर्माण राष्ट्रकूट-साम्राज्य के अवशेषों पर किया।

तैल द्वितीय (993-997 ई) एक महान् योद्धा हुआ। उसने चेदि, उड़ीसा, कुन्तल, गुजरात के चालुक्य, मालवा के परमार-शासक मुंज और चोल-शासक उत्तम को परास्त किया। तैल द्वितीय ने छः बार मालवा पर आक्रमण किया परन्तु हर बार शासक मुंज या उत्पल ने इन आक्रमणों का सफलतापूर्वक प्रतिरोध किया। बार-बार के आक्रमणों से परेशान होकर मुंज ने गोदावरी पार कर चालुक्य साम्राज्य पर आक्रमण कर दिया। परन्तु मुंज पराजित हुआ और उसे बन्दी बनाकर मान्यखेद लाया गया जहाँ बाद में उसकी हत्या कर दी गई। उसने लाट और पांचाल-प्रदेश को अपने अधीन कर लिया। इस प्रकार, विभिन्न युद्धों में भाग लेकर उसने चालुक्यों के एक बड़े साम्राज्य का निर्माण किया। वह अपने को बादामी के महान चालुक्य-शासकों का वंशज बताता था। उसने पुनः उनकी कीर्ति की स्थापना की।

तैल के उत्तराधिकारी सत्याश्रय (997-1008 ई) को भी अनेक युद्ध लड़ने पड़े। उसे परमार-शासक सिन्धुराज और कलचुरि-शासक कोक्कल द्वितीय ने परास्त किया परन्तु उसने चोल-शासक राजराज को परास्त करने में सफलता पायी। सत्याश्रय के उत्तराधिकारी विक्रमादित्य पंचम (1008-1014 ई) और अय्यन द्वितीय (1014-1015 ई.) का शासन-काल महत्वहीन रहा। उनके पश्चात् जयसिंह द्वितीय (1015-1043 ई.) को कलचुरि के गांगेयदेव, परमार भोज और राजेन्द्र चोल जैसे शक्तिशाली राजाओं की सम्मिलित शक्ति का मुकाबला करना पड़ा। झगड़े का मुख्य कारण चालुक्यों तथा चोल-शासकों का वेंगी के पूर्वी चालुक्य-

राज्य पर अधिकार करने का प्रयत्न था। परन्तु जयसिंह अपने राज्य की रक्षा करने में असमर्थ रहा।

उसके पश्चात् सोमेश्वर प्रथम (1043-1068 ई) शासक बना। सोमेश्वर प्रथम को उत्तर भारत में सफलता प्राप्त हुई। उसने 1055 ई. में मालवा के परमार शासक भोज और इसके बाद कलचुरि शासक लक्ष्मीकर्ण और परमार शासक भोज को पराजित करके आधुनिक मध्य प्रदेश के दक्षिणी जिलों पर अधिकार कर लिया। उसने कोंकण को जीता, मालवा, गुजरात, दक्षिणी-कोसल और केरल पर आक्रमण किये तथा कलचुरि-शासक कर्ण से युद्ध किया। परन्तु उसका मुख्य झगड़ा चोल-शासकों से रहा। चोल-शासक राजाधिराज ने उसकी राजधानी कल्याणी को लूटने में सफलता पायी परन्तु सोमेश्वर संघर्ष करता रहा और अन्त में एक युद्ध में राजाधिराज चोल मारा गया। परन्तु उसके भाई राजेन्द्र चोल द्वितीय ने सोमेश्वर के आक्रमणों के विरुद्ध चोल-राज्य की रक्षा करने में सफलता पायी और अन्त में 1063 ई. में सोमेश्वर की पराजय हुई। सोमेश्वर प्रथम के पश्चात् सोमेश्वर द्वितीय (1068-1076 ई) और उसके बाद विक्रमादित्य षष्ठ (1076-1126 ई) शासक बना। विक्रमादित्य ने अनेक राजाओं से युद्ध करके अपने राज्य का विस्तार किया। उसका राज्य उत्तर में नर्मदा नदी और दक्षिण में कडप्पा तथा मैसूर तक फैला हुआ था। विक्रमादित्य के पश्चात् सोमेश्वर तृतीय (1126-1138 ई), जगदेकमल्ल (1138-1151 ई) और तैल तृतीय शासक हुए। तैल तृतीय के समय में चालुक्य-राज्य छिन्न-भिन्न हो गया। उसने चालुक्य कुमारपाल और कुलोत्तुंग चोल के विरुद्ध तो सफलता पायी परन्तु काकतीय राजाओं के विरुद्ध उसकी पराजय हुई। अन्त में, उसी के सेनापति विज्जल ने उसकी राजधानी कल्याणी पर अपना अधिकार कर लिया। 1156-1181 ई. के मध्य-काल में वास्तविक सत्ता विज्जल और उसके वंश के उत्तराधिकारियों के हाथों में रही। 1181 ई. में सोमेश्वर चतुर्थ (1181-1189 ई) ने अपने वंश के राज्य पर अधिकार कर लिया परन्तु यादव-शासक भिल्लम ने उसे परास्त करके भागने पर बाध्य किया। सोमेश्वर चतुर्थ को जो चालुक्य-वंश का अन्तिम शासक हुआ, गोआ में अपने ही एक अधीनसामन्त के यहाँ रहकर अपना शेष जीवन व्यतीत करना पड़ा।

4. चालुक्य-वंश की उपलब्धियाँ (Achievements of Chalukya Dynasty)

चालुक्य-वंश के शासकों ने दक्षिणापथ में एक विशाल साम्राज्य स्थापित किया। बादामी के चालुक्यों ने प्रायः 200 वर्षों तक और उसी प्रकार कल्याणी के चालुक्यान ने बाद में प्रायः उतने ही समय तक इस साम्राज्य तथा इसकी कीर्ति को स्थापित रखा। इस वंश के शासकों में

अनेक शासक महान योद्धा हुए और उन्होंने उत्तर तथा दक्षिण भारत के अनेक यशस्वी शासकों को परास्त करने में सफलता पायी। उनमें से अनेक ने परमेश्वर परमभटारक आदि उपाधियाँ ग्रहण की। इस प्रकार, दक्षिण भारत की राजनीति में उनका स्थान एक लम्बे समय तक महत्वपूर्ण रहा।

परन्तु राजनीति के अतिरिक्त उन्होंने दक्षिण भारत की सांस्कृतिक प्रगति में भी महत्वपूर्ण भाग लिया। चालुक्य-शासकों का राज्य आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न था और उसके अंतर्गत कई अच्छे बन्दरगाह थे जिनसे विदेशी व्यापार में सुविधा थी। उस सम्पन्नता का उपयोग चालुक्य-शासकों ने साहित्य तथा ललित-कलाओं की प्रगति के लिए किया।

धार्मिक दृष्टि से चालुक्य-शासक हिन्दू धर्म के अनुयायी थे। उन्होंने प्राचीन वैदिक धर्म के अनुसार अनेक यज्ञ किये और उनके समय में धार्मिक ग्रन्थों की रचना अथवा उनका संकलन किया गया। पुलकेशियन् द्वितीय और कुछ अन्य शासकों ने अश्वमेध और ताडमेय जैसे यज्ञ किये थे। परन्तु उन्होंने पौराणिक हिन्दू धर्म का भी पालन किया और विष्णु तथा शिव के मन्दिरों का निर्माण कराया। इससे हिन्दू धर्म दक्षिण-भारत में लोकप्रिय हुआ। परन्तु चालुक्य-शासक धार्मिक दृष्टि से बहुत उदार थे। अन्य धर्मों के प्रति उनका व्यवहार पूर्ण सहनशीलता का था, मुख्यतया उनमें से कई ने जैन धर्म को सहायता प्रदान की। ऐहौल-प्रशस्ति का लेखक रविकीर्ति जैन था परन्तु उसने पुलकेशियन् द्वितीय से सर्वोच्च पुरस्कार प्राप्त किया था। इसी प्रकार विजयादित्य और विक्रमादित्य ने जैन विद्वानों को अनेक गाँव दान में दिये थे। दक्षिण भारत में जैन धर्म लोकप्रिय था। सम्भवतया, इसी कारण अपनी प्रजा की धार्मिक भावनाओं को ध्यान में रखते हुए चालुक्य-शासकों ने जैन धर्म के प्रति उदारता की नीति अपनायी थी। परन्तु इसके अतिरिक्त बम्बई के थाना जिले में पारसियों को बसने की आज्ञा देना और उन्हें उनके धर्म का पालन करने की पूर्ण स्वतन्त्रता प्रदान करना चालुक्यों की उदार धार्मिक प्रवृत्ति को सिद्ध करता है। उनके समय में बौद्ध धर्म पतनोन्मुख था परन्तु सर्वथा लुप्त नहीं हुआ था जैसा कि चीनी-यात्री ह्वेनसांग के वर्णन से सिद्ध भी होता है। ह्वेनसांग ने अनेक व्यवस्थित बौद्ध-विहारों और मठों को चालुक्य-राज्य के अन्तर्गत पाया था।

ललित-कलाओं में चित्र-कला और सबसे अधिक वास्तु-कला की प्रगति इस समय में हुई। अजन्ता के भित्ति-चित्रों में से कुछ का निर्माण चालुक्य-शासकों के समय में हुआ। इनमें से एक चित्र में पुलकेशियन् द्वितीय के दरबार में पर्शिया (ईरान) के राजदूत के स्वागत के दृश्य को चित्रित किया गया है। वास्तु-कला के क्षेत्र में चालुक्यों के समय की एक मुख्य विशेषता पहाड़ों और चट्टानों को काटकर बड़े-बड़े मन्दिरों का निर्माण था। उनके समय में विभिन्न हिन्दू गुहा

(गुफा) मन्दिरों और चैत्य-हालों का निर्माण किया गया। सम्राट मंगलेश ने वातापी के विष्णु के गुफा-मन्दिर का निर्माण कराया। 634 ई. में मेगुति का शिव-मन्दिर बनाया गया जिसमें रविकीर्ति द्वारा लिखित पुलकेशियन् द्वितीय की प्रशस्ति भी है। ऐहौल का विष्णु मन्दिर जिसमें विक्रमादित्य द्वितीय का एक अभिलेख है, चालुक्य-कला का एक अच्छा नमुना माना गया है। सम्राट विजयादित्य ने बीजापुर जिले में विजयेश्वर (शिव) का मन्दिर बनवाया जिसे अब संगमेश्वर का मंदिर पुकारा जाता है। उसकी बहन ने लक्ष्मेश्वर नामक स्थान पर एक जैन मन्दिर का निर्माण कराया। सम्राट विक्रमादित्य की पत्नी ने पट्टदकल (बीजापुर जिला) नामक स्थान पर लोकाेश्वर नाम का एक शिव-मन्दिर बनवाया जिसे अब वीरपक्ष मन्दिर कहा जाता है। इतिहासकार हेवेल ने उसकी बहुत प्रशंसा की है। विक्रमादित्य की एक अन्य पत्नी ने इसी मन्दिर के निकट त्रिलोकाेश्वर नाम का एक भव्य मन्दिर बनवाया। चालुक्य-शासकों के समय में बने इन मन्दिरों ने भारतीय वास्तु-कला की प्रगति में सहयोग दिया।